कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते

एम्.ए – II, IV सेमेस्टर

डॉ उमा शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
एन.ए.एस (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

एम.ए. II, IV Sem

डा० उमा शर्मा
संस्कृत-विभाग

कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते

संस्कृति में जिस प्रकार महाकवि कालिदास शृंगार-रस के प्रयोग-हेतु सिद्धहस्त माने जाते हैं तथैव भवभूति करुण-रस हेतु भवभूति की प्रसिद्धि है। वस्तुतः दोनों ही नाटककार के रूप में प्रतिस्पर्धी महाकवि हैं। भवभूति का यह वैशिष्ट्य है कि उनके पास बहिर्दृष्टि के साथ सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि भी है। मानव की अन्तःस्थिति का जितना सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भवभूति ने किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। जगत् की नश्वरता को देखकर भवभूति के कारुण्य की धारा बह निकलती थी। उन्होंने राम-कथा, मुख्यतया सीता-परित्याग, को लेकर अपनी भावनाओं को मूर्त रूप दिया है। उनकी वाणी में इतनी क्षमता है कि वे वृक्ष-वनस्पति ही नहीं अपितु पर्वतों को भी रुला देने की क्षमता रखते हैं। 'उत्तररामचरितम्' सीता के वियोग में राम की करुण दशा (अवस्था) को पढ़ने एवं देखने वाला असहृदय व्यक्ति भी सजल-नेत्र हो जाता है। भवभूति की कृतियों में भावों की कोमलता, हृदय-स्पर्शिता, तादात्म्यानुभूति और संवेदनशीलता है, अतएव कवियों ने—
"कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते" कहकर भवभूति को यशोगान किया है।

कतिपय मार्मिक प्रसंगों द्वारा उक्त कथन को सिद्ध करने का प्रयास है.

छद्म- नीति से 'रावण' के द्वारा 'सीताजी' के अपहृत हो जाने पर उनके वियोग में राम के द्वारा जो करुण क्रन्दन किया गया एवं उस समय उनकी जो दयनीय स्थिति थी उससे पत्थर भी रो उठे थे तथा वज्र का हृदय भी फट गया था -

" अपदेहं रक्षोभिः . . . .
अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् ॥(उ.रा.1-28)

सीता-परित्याग के पश्चात् शोकाग्नि राम को अन्दर ही अन्दर इस प्रकार झुलसा रही है जैसे कोई आयुर्वैदिक औषधि पुटपाक के अन्दर ही अन्दर खदक-खदक कर पकती है-

" अनिर्भिन्नो गंभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥"

राम ने गर्भिणी सीता का परित्याग किया था। वह भयभीत बाल-मृगी के तुल्य चंचल नेत्र तथा सुकुमार अंगों वाली थी, राम को विश्वास है कि जंगली हिंसक जन्तु उसे अवश्य खा गए होंगे — "त्रस्तैकहायनकुरङ्गविलोलदृष्टे - - - - - .
क्रव्याद्भिरङ्गलतिका नियतं विलुप्ता ॥" (उ.रा.च. 3-28)

सीता की मार्मिक दशा का चित्रण करते हुए लिखा है —
" करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव जानकी (वही- 3.4)

राम शोक से संतप्त होकर कहते हैं कि मैं दुःख भोगने के लिए ही जीवित हूँ - दुःखसंवेदनायैव रामे चैतन्यमाहितम्।
मर्मोपघातिभिः प्राणैर्वज्रकीलायितं हृदि॥" (वही 1.47)

राम के मुक्त कण्ठ से रुदन से सीता के दुःखी होने पर 'तमसा' कहती है- शोक से क्षुब्ध हुआ हृदय फूट-फूटकर रोने के द्वारा ही थामा जाता है—

" पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया ।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते ।" (वही-3-29)

पंचवटी में पहुँचकर सीता के साथ वनवासकालीन परिचित दृश्यों को देखकर राम का प्राचीन शोक नवीन हो उठता है और उन्हें उसी प्रकार व्याकुल कर रहा है जैसे प्रसूत हुआ विष एवं हृदय के मर्मस्थल में फूटा हुआ फोड़ा। इसमें भवभूति की संवेदना का प्रस्फुरण स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा है "चिराद् वेगारम्भी ----
पुराभूतः शोको विकलयति मां नूतन इव ।।" (2.26)

राम के शोक का सजीव चित्रण है कि हृदय फट रहा है, किन्तु दो टुकड़े नहीं होता — दलति हृदयं ...
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम् 3.11

राम कहते हैं- हे सीता, मेरा हृदय फट रहा है, अंग शिथिल हो रहे हैं; संसार सूना हो गया है, मेरा हृदय जल रहा है, घोर अन्धकार में मेरी आत्मा डूब सी रही है, मूर्छा मुझे चारों ओर से घेर रही है। मैं अभागा क्या करूँ—

" हा हा देवि! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः
...
विष्वङ् मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि ।। वही- 3.38

उक्त उद्धरणों के माध्यम से कवि के कथन - कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते" उक्ति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है ।